RNI: UPHIN/2021/81679

द वुमनिया टाइम्स

आधी आबादी की दुनिया

वर्ष : 04 | अंक:8 | गौतमबुद्ध नगर | मार्च, 2026 | पृष्ठ : 04 | मूल्य : 20 रुपए

मोदी ने शहादत दिवस पर चंद्रशेखर आजाद को दी श्रद्धांजलि

प्रधानमंत्री का संदेश: भारत माता के वीर पुत्र चंद्रशेखर आजाद की वीरता को सलाम

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद को उनकी शहादत दिवस पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और देश के स्वतंत्रता संग्राम में उनके अद्वितीय बलिदान को याद किया। श्री मोदी ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, "भारत माता के वीर पुत्र चंद्रशेखर आजाद की शहादत दिवस पर मैं उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उन्होंने भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया, जिसके लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा।" चन्द्रशेखर आजाद देश के स्वतंत्रता आंदोलन के सबसे प्रमुख क्रांतिकारियों में से एक थे। उन्हें अद्वितीय साहस और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को समाप्त करने के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के लिए श्रद्धापूर्वक याद किया जाता है। वर्ष 1906 में जन्मे आजाद किशोरावस्था में ही स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गए और बाद में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए) में एक क्रांतिकारी के रूप में उभरे। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों के साथ मिलकर काम किया और उत्तर भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों को पुनर्गठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आजाद का साहस उस समय किंवदंती बन गया जब उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा कभी भी जीवित न पकड़े जाने की शपथ ली - एक ऐसी प्रतिज्ञा जिसे उन्होंने 27 फरवरी, 1931 को इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस मुठभेड़ के दौरान उन्होंने खुद को गोली ली। देश भर के राजनीतिक नेताओं, इतिहासकारों और नागरिकों ने भी आजाद की वीरता और देशभक्ति को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री का संदेश भी देशभर में दी जा रही श्रद्धांजलि में शामिल हो गया, जिसमें आजाद की उस स्थायी विरासत को रेखांकित किया गया

"डुबती हुई स्वर्ण संस्कृति"

बड़ों का सम्मान डुब गया,
बच्चों का प्यार डुब गया,
बहू का घूंघट डुब गया,
सांस की लज्जा डुब गई,
हमारी स्वर्ण संस्कृति डुब गई,
पाश्चय संस्कृत उबर गई।।

व्यक्ति का चरित्र डुब गया,
अतिथि का सत्कार डुब गया,
भाई का कर्तव्य डुब गया,
बहन की राखी डूब गई,
हमारी स्वर्ण संस्कृति डूब गई,
पाश्चय संस्कृति उबर गई।।

बड़ों का सानिध्य डुब गया,
बच्चों के संस्कार डुब गये,
हमारा सुनहरा इतिहास डुब गया,
बहन- बेटी की मयार्दा डुब गई,
हमारी स्वर्ण संस्कृति डुबी गई,
पाश्चय संस्कृति उबर गई।।

स्त्री के गहने डुब गये,
वीरों की तलवारे डुब गई,
देवर की हद (सीमा)डूब गई,
भाभी की मयार्दा डुब गई,
हमारी स्वर्ण संस्कृति डुब गई,
पाश्चय संस्कृति उबर गई।।

देवी सिंह राजपूत
अचलपुर (जालौर)

उत्तर प्रदेश के संविदा और सफाई कर्मचारियों के लिए खुशखबरी

होली पर तीन दिन की छुट्टी, त्योहार से पहले मिलेगा वेतन

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में सभी कर्मचारियों को होली के त्योहार से पहले वेतन दिया जाएगा। इस संबंध में राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। शुक्रवार को मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) ने यह जानकारी दी। सीएमओ के अनुसार, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी अधिकारियों से कहा है कि वे सभी कर्मचारियों का वेतन होली से पहले दिया जाना सुनिश्चित करें। सीएम योगी ने यह भी कहा कि इसमें किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इसके अलावा, सीएमओ ने जानकारी दी कि राज्य में शनिवार को कार्यदिवस घोषित किया गया है।

इसके साथ ही, 2 मार्च से 4 मार्च तक होली का अवकाश रहेगा। इससे पहले, कृषि विभाग की ओर से त्योहार पर किसानों को कृषि यंत्र का तोहफा देने की पहल की गई। अनुदान पर मिलने वाले कृषि यंत्रों के लिए बुकिंग प्रारंभ हो गई है, जो चार मार्च तक चलेगी। किसानों को कृषि विभाग की वेबसाइट पर ऑनलाइन आवेदन करना होगा। किसानों का यह तोहफा कृषि विभाग की ओर से संचालित सब मिशन ऑन एग्रीकल्चरल मैकेनाइजेशन योजना के तहत दिया जाएगा। योजना के अनुसार, फार्म मशीनरी बैंक, कृषि ड्रोन, अन्य एकल कृषि यंत्र और प्रमोशन ऑफ एग्रीकल्चरल मैकेनाइजेशन फॉर इन-सीटू मैनेजमेंट ऑफ क्रॉप रेज्ड्यू योजना के अंतर्गत फसल अवशेष प्रबंधन के अन्य एकल कृषि यंत्र व अन्य योजनाओं के कृषि यंत्र/कृषि रक्षा उपकरण के आवेदन चार मार्च तक किए जा सकते हैं। त्वरित मक्का विकास कार्यक्रम के तहत बैच ड्रायर और मेज सेलर के लिए आवेदन कर सकते हैं। कृषि यंत्रों की बुकिंग द्वारा आवेदन विभाग की वेबसाइट पर ऑनलाइन करनी होगी। इस लिंक पर किसान कॉर्नर के अंतर्गत यंत्र बुकिंग प्रारंभ पर क्लिक कर ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। यंत्रों से जुड़ी समस्त जानकारी व अनुदान प्रक्रिया पर इस वेबसाइट पर उपलब्ध है। लाभार्थियों का चयन द्वारा बुकिंग टोकन कंफर्म होने की तिथि से कृषि यंत्र खरीद कर उसकी रसीद व फोटो 10 दिन के भीतर वेबसाइट पर अपलोड करना होगा।

मुख्यमंत्री ने सभी अधिकारियों से कहा है कि वे सभी कर्मचारियों का वेतन होली से पहले दिया जाना सुनिश्चित करें। सीएम योगी ने यह भी कहा कि इसमें किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इसके अलावा, सीएमओ ने जानकारी दी कि राज्य में शनिवार को कार्यदिवस घोषित किया गया है।

गाँव तक क्यों नहीं पहुंचती है बेहतर स्वास्थ्य व्यवस्था?

(मोना खलझूनिया जखेड़ा, उत्तराखंड)

हमारे ग्रामीण क्षेत्रों को वैसे तो कई बुनियादी आवश्यकताओं की जरूरत है। लेकिन सबसे अधिक जिस मुद्दे पर ध्यान देने की आवश्यकता है, वह है स्वास्थ्य का मुद्दा। जो आज भी इससे वंचित रह जाता है। ग्रामीण स्वास्थ्य सांख्यिकी की रिपोर्ट के अनुसार देश की लगभग 65 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है, लेकिन डॉक्टरों का बड़ा हिस्सा शहरों तक ही केंद्रित होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की भारी कमी है। डॉक्टरों, नर्सों और लैब-टेक्नीशियनों के हजारों पद खाली पड़े हैं। कई जगह अस्पताल भवन बने हुए हैं, पर नियमित डॉक्टर नहीं हैं, उपकरण अधूरे हैं और रात की आपात सेवा लगभग नहीं के बराबर है। इसका सीधा असर उन लोगों पर पड़ता है जिनके पास निजी अस्पताल या शहर तक पहुँचने के साधन नहीं होते हैं। मैदानी क्षेत्रों की अपेक्षा पहाड़ी राज्यों के दूर दराज गांवों की स्थिति इससे भी अधिक कठिन है, क्योंकि यहाँ अस्पताल तक पहुँचना ही अपने-आप में एक चुनौती है। उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश गांवों से नजदीकी बड़े अस्पताल की दूरी कम से कम 20 से 50 किमी तक होना आम बात है। जहां पहुँचने के लिए न केवल जर्जर सड़क बल्कि मौसम और अक्सर परिवहन की कमी के कारण समय पर इलाज मिल पाना मुश्किल हो जाता है। वर्ष 2026-27 के केंद्रीय बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए लगभग 95 हजार करोड़ रुपये से अधिक का प्रावधान किया गया, जिसमें आयुष्मान भारत, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ और अस्पताल ढांचे को मजबूत करने की बात कही गई। राज्य स्तर पर भी स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार की घोषणाएँ होती रहती हैं, पर पहाड़ के छोटे गांवों तक इनका असर बहुत धीमी गति से पहुंचता है। इसका एक उदाहरण उत्तराखंड के बागेश्वर जिला स्थित गरुड़ ब्लॉक का जखेड़ा गाँव है। जहां संचालित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सुविधाओं के अभाव में चल रहा है। यह अस्पताल केवल जखेड़ा गांव ही नहीं बल्कि आसपास के

कई गांव जैसे गनीगांव, सैलानी, और लमचूला के लोगों का भी सहारा है। जखेड़ा की आबादी लगभग 1500, गनीगांव की 1600, सैलानी की 1200 और लमचूला की लगभग 1500 है. यानी करीब 5,800 लोग इस एक प्राथमिक अस्पताल पर निर्भर हैं। इतनी आबादी होने के बावजूद अस्पताल में मूलभूत सुविधाओं का अभाव यहां के निवासियों के जीवन को खतरे में डालता हैं। इस संबंध में जखेड़ा गांव के 55 वर्षीय रघुवीर सिंह परिहार बताते हैं, अस्पताल तो और भी हैं, लेकिन जरूरत पूरी नहीं होती। डॉक्टर भी केवल एक है, साथ में एक वार्ड बॉय और फार्मासिस्ट हैं। एक आयुर्वेदिक अस्पताल करीब 30 साल पहले (1991-92) बना था, लेकिन सुविधा कोई खास नहीं है। आशा कार्यकर्ता कांता परिहार कहती हैं, ह्लयहाँ सिर्फ बुखार या जुकाम जैसी मामूली बीमारियों से जुड़ी दवाइयाँ ही मिलती हैं और सामान्य जाँच तक ही इलाज सीमित है।" वह बताती हैं कि अस्पताल में स्टाफ सुबह 10 बजे आते हैं और दोपहर 2 बजे तक चले जाते हैं। ऐसे में रात में जरूरत पड़ने पर ग्रामीणों को बहुत परेशानी होती है। एंबुलेंस तक समय पर नहीं पहुंच पाती है। मरीज को निजी परिवहन की व्यवस्था कर 33 किमी दूर गरुड़ या बैजनाथ के सदर अस्पताल ले जाना पड़ता है पहुँचते-पहुँचते कई बार मरीज की हालत गंभीर हो जाती है। स्वास्थ्य सेवा का एक पहलू ऐसा भी है जिसके बारे में अक्सर कोई नहीं बोलता है। सैलानी की 20 वर्षीय प्रीति बताती है, माहवारी के दौरान पेट दर्द जैसी समस्या होने पर अस्पताल में खुलकर बात नहीं कर पाती, क्योंकि डॉक्टर पुरुष हैं। अगर महिला डॉक्टर होती तो हम खुलकर अपनी बात कह पाते ह्व स्थानीय पोस्ट ऑफिस कर्मचारी उम्मेद सिंह कहते हैं, यहाँ की जनसंख्या के हिसाब से अस्पताल तो है, लेकिन सुविधाएँ नहीं हैं। एएनएम का पद है, पर वे अक्सर मौजूद नहीं रहतीं और रात में डॉक्टर भी नहीं होते हैं ह्व 66 वर्षीय गोविंद परिहार की चिंता दवाइयों को लेकर है, कहते हैं कि दवाइयाँ कम हैं और कई बार पुरानी हो जाती हैं। प्राथमिक उपचार भी पूरा नहीं मिल पाता। गंभीर मरीज को तुरंत रेफर कर दिया जाता है, लेकिन यह निश्चित नहीं होता कि वह रास्ते में बच पाएगा या नहीं। लमचूला की रहने वाली माया कहती है, अगर अस्पताल में सुविधाएं होती तो हमें दूर नहीं जाना पड़ता। खासकर महिलाओं के लिए महिला डॉक्टर होती तो बात करना आसान होता और जीवन थोड़ा आसान लगने लगता। गनीगांव के 33 वर्षीय धीरज बिष्ट बच्चों और गर्भवती महिलाओं की कठिनाई बताते हुए कहते हैं, यहाँ मेडिकल स्टोर भी नहीं है और अस्पताल में जरूरी दवाइयां नहीं मिलती हैं, यहां तक कि एंबुलेंस जैसी जरूरी सुविधा की व्यवस्था तक नहीं है। रात में स्टाफ की जरूरत है, जो नहीं है। कई बार बच्चों को गंभीर बीमारी में अस्पताल पहुँचाने तक जान चली जाती है। गर्भवती महिलाओं को एंबुलेंस आने तक दर्द सहना पड़ता है। अगर यही सुविधा गांव में होती तो हमारी बहू-बेटियों, बच्चों और बुजुर्गों को इतनी परेशानी नहीं होती। 60 वर्षीय माधव सिंह कहते हैं, भवन है, सामग्री है, लेकिन सुविधा नहीं है। कई बार अधिकारियों से बात की, पर सुधार नहीं हुआ। दरअसल, स्वास्थ्य सुविधा केवल एक सेवा नहीं, बल्कि लोगों की जिंदगी से जुड़ा विषय है। जब कोई गर्भवती महिला रात में दर्द सहते हुए वाहन का इंतजार करती है, जब कोई युवती अपनी तकलीफ बताने में संकोच करती है, या जब बुजुर्ग को दवा के बजाय रेफर-स्लिप मिलती है, तब समस्या सिर्फ अस्पताल की नहीं रहती बल्कि हाशिये पर रहने वाले लोगों तक सुविधा नहीं पहुंचाने की कमी को दर्शाती है। सरकारी बजट, योजनाएं और घोषणाएं तभी सार्थक होंगी जब अस्पताल केवल दीवारों का ढाँचा न रह जाए, बल्कि वहां डॉक्टर हों, दवा हो, रात की सेवा हो और मरीज को यह भरोसा हो कि संकट की घड़ी में उसे इलाज के लिए अपने गांव से बाहर जाना नहीं पड़ेगा। पहाड़ के इन गांवों की मांग बहुत बड़ी नहीं है बस इतना है कि बीमार पड़ने पर उन्हें इलाज की सभी सुविधाएं जल्द उपलब्ध हो जाएं।

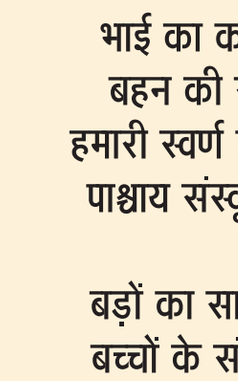

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय त्योहार है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रंगों का त्योहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता

है। होली भारत का अत्यंत प्राचीन पर्व है जो होली, होलिका या होलाका नाम से मनाया जाता था। वसंत की ऋतु में हर्षोल्लास के साथ मनाए जाने के कारण इसे वसंतोत्सव और काम-महोत्सव भी कहा गया है।

रंगों का महापर्व होली

रंग खेलते हुए अगर थोड़ी सी लापरवाही हो जाए तो आपकी आंखों और त्वचा को काफी नुकसान हो सकता है।

राधा-श्याम गोप और गोपियो की होली

इतिहासकारों का मानना है कि आर्यों में भी इस पर्व का प्रचलन था लेकिन अधिकतर यह पूर्वी भारत में ही मनाया जाता था। इस पर्व का वर्णन अनेक पुरातन धार्मिक पुस्तकों में मिलता है। इनमें प्रमुख हैं, जैमिनी के पूर्व मीमांसा-सूत्र और कथा गार्हय-सूत्र। नारद पुराण और भविष्य पुराण जैसे पुराणों की प्राचीन हस्तलिपियों और ग्रंथों में भी इस पर्व का उल्लेख मिलता है। विंध्य क्षेत्र के रामगढ़ स्थान पर स्थित ईसा से 300 वर्ष पुराने एक अभिलेख में भी इसका उल्लेख किया गया है। संस्कृत साहित्य में वसन्त ऋतु और वसन्तोत्सव अनेक कवियों के प्रिय विषय रहे हैं।

सार्वजनिक होली मिलन

सारा समाज होली के रंग में रंगकर एक-सा बन जाता है। रंग खेलने के बाद देर दोपहर तक लोग नहाते हैं और शाम को नए वस्त्र पहनकर सबसे मिलने जाते हैं।

होली से अगला दिन धूलिवंदन कहलाता है। इस दिन लोग रंगों से खेलते हैं। सुबह होते ही सब अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से सबका स्वागत किया जाता है। लोग अपनी ईर्ष्या-द्वेष की भावना भुलाकर प्रेमपूर्वक गले मिलते हैं तथा एक-दूसरे को रंग लगाते हैं। इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती हैं। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। सारा समाज होली के रंग में रंगकर एक-सा बन जाता है। रंग खेलने के बाद देर दोपहर तक लोग नहाते हैं और शाम को नए वस्त्र पहनकर सबसे मिलने जाते हैं। प्रीति भोज तथा गाने-बजाने के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं होली के दिन घरों में खीर, पूरी और पूड़े आदि विभिन्न व्यंजन पकाए जाते हैं। इस अवसर पर अनेक मिठाइयाँ बनाई जाती हैं जिनमें गुझियों का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बेसन के सेव और दहीबड़े भी सामान्य रूप से उत्तर प्रदेश में रहने वाले हर परिवार में बनाए व खिलाए जाते हैं। कांजी, भांग और ठंडाई इस पर्व के विशेष पेय होते हैं। पर ये कुछ ही लोगों को भाते हैं। इस अवसर पर उत्तरी भारत के प्राय: सभी राज्यों के सरकारी कार्यालयों में अवकाश रहता है, पर दक्षिण भारत में उतना लोकप्रिय न होने की वज़ह से इस दिन सरकारी संस्थानों में अवकाश नहीं रहता ।

गुलाल में ऐसे छोटे-छोटे कण मौजूद होते हैं, जो यदि आंखों में चले जाएं तो कॉर्निया को नुकसान पहुंचा सकते हैं। कॉर्नियल एब्रेशन ऐसी ही एक एमरजेंसी होती है, जहां आंखों से निरंतर पानी गिरता रहता है और दर्द भी बना रहता है। यदि ध्यान न दिया जाए तो आंखों में संक्रमण या अल्सर हो सकता है।

होली खेलें पर सावधानी से

अब रंगों के त्योहार होली का बड़ी ही उत्सुकता से इंतजार किया जा रहा है। होली से जुड़ा है रंग, गुलाल व अबीर। लेकिन रंग खेलते हुए अगर थोड़ी सी लापरवाही हो जाए तो आपकी आंखों और त्वचा को काफी नुकसान हो सकता है।

होली के समय में हमारी आंखों को सबसे अधिक नुकसान पहुंच सकता है, क्योंकि होली में इस्तेमाल किए जाने वाले रंग आंखों में जलन, संक्रमण पैदा कर सकते हैं या फिर आंखों को चोटिल कर सकते हैं। होली के बाद अस्पतालों में सामान्य तौर पर त्वचा व आंखों के मरीजों की आवाजाही बढ़ जाती है। इसलिए सावधानी जरूर बरतनी चाहिए।

आंखों में जलन की समस्या

कुछ रंगों के आंखों के साथ संपर्क में आने से आंखों में जलन होने लगती है और आंखें लाल हो जाती हैं। अगर यह समस्या दो चार दिनों में ठीक न हो तो डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी हो जाता है। आंखों में किसी प्रकार की समस्या होने पर यह देखना चाहिए कि आपकी दृष्टि की स्पष्टता में तो कोई कमी नहीं आई है? यदि हां तो तुरंत डॉक्टर से मिलें।

ये सावधानियां हैं जरूरी

- अपनी आंखों को बचाकर रखें। कोई आप के पास रंग लगाने आए तो अपनी आंखों को बंद करके पहले बचाने का प्रयास करें।
- आंखों में चश्मा पहनें, जिससे खतरनाक रंगों के रसायन से आपकी आंखें बच सकें।
- बालों पर कोई बड़ी-सी टोपी या हैट लगाएं, जिससे आपके बालों का केमिकल डाई के दुष्प्रभाव से बचाव हो सके।
- नहाते समय और रंगों को निकालते समय आंखों को अच्छी तरह से बंद कर लें ताकि पानी के साथ बहता हुआ रंग आप की आंखों में प्रवेश न कर सके।
- घर पर खुद ही रंग बनाएं और उन्हीं का इस्तेमाल करें। बाहर के खरीदे हुए हानिकारक रंगों को इस्तेमाल न ही करें तो ही अच्छा है।
- बच्चों को गुब्बारों से खेलने के लिए उत्साहित न करें, क्योंकि गुब्बारे कभी भी किसी की आंखों को नुकसान पहुंचा सकते हैं।
- अपने रंग लगे हाथों को आंखों के पास न ले जाएं। हाथ धोने के बाद ही आंखों को छुएं। आंखों को मसलने या रगड़ने की गलती भी न करें।
- ऐसे लोगों से बचने का प्रयास करें, जो हाथों से आपके चेहरे पर रंग लगाने आएं। यदि कोई रंग लगाने आए तो आप आंखों और होंठों को बंद कर लें ताकि रंग आपके मुंह या आंखों में न जा पाए।
- होली खेलने से पहले चेहरे पर कोल्ड क्रीम की एक मोटी परत लगाएं ताकि रंग लगने के बाद जब आप अपना चेहरा धोएं तो रंग आसानी से निकल जाए।
- यदि आंखों में कोई रंग चला जाए तो तुरंत पानी के छीटे मारें। यदि लक्षण कुछ भीषण प्रतीत हो रहा हो तो तुरंत डॉक्टर को दिखाएं।
- होली के बाद आपको आंखों में हल्की असहजता महसूस हो रही हो तो रुई के फाहे पर गुलाब जल छिड़क कर आंखों पर थोड़ी देर के लिए रखें। इससे आपकी थकी हुई आंखों को आराम मिलेगा।
- यदि आंखों में रंग चला जाए और आंखों में जलन, सूजन या दर्द हो तो साफ पानी से आंखें धोएं। थोड़ी देर देखें, अगर तब भी लक्षण ऐसे ही रहें तो डॉक्टर के पास जाएं।
- यदि आंख में गुब्बारे या रंग में मिले हुए किसी कण से चोट लग गई हो, रेटिना को नुकसान पहुंचा हो, रक्तस्राव हो, तो आंखों को पानी से धोने की गलती न करें। ऐसे में आंखें बंद करें और तुरंत अस्पताल जाएं।

आंखों को चोट न लगे

गुलाल में ऐसे छोटे-छोटे कण मौजूद होते हैं, जो यदि आंखों में चले जाएं तो कॉर्निया को नुकसान पहुंचा सकते हैं। कॉर्नियल एब्रेशन ऐसी ही एक एमरजेंसी होती है, जहां आंखों से निरंतर पानी गिरता रहता है और दर्द भी बना रहता है। यदि ध्यान न दिया जाए तो आंखों में संक्रमण या अल्सर हो सकता है। होली पर गुब्बारों के इस्तेमाल से आंखों में अंदरूनी रक्तस्राव हो सकता है या किसी प्रकार की भी चोट लग सकती है।

होली रंगों का त्योहार है, हँसी-खुशी का त्योहार है, लेकिन होली के भी अनेक रूप देखने को मिलते है। प्राकृतिक रंगों के स्थान पर रासायनिक रंगों का प्रचलन, भांग-ठंडाई की जगह नशेबाजी और लोक संगीत की जगह फ़िल्मी गानों का प्रचलन इसके कुछ आधुनिक रूप हैं। लेकिन इससे होली पर गाए-बजाए जाने वाले ढोल, मंजीरों, फाग, धमार, चैती और ठुमरी की शान में कमी नहीं

आती। अनेक लोग ऐसे हैं जो पारंपरिक संगीत की समझ रखते हैं और पर्यावरण के प्रति सचेत हैं। इस प्रकार के लोग और संस्थाएँ चंदन, गुलाबजल, टेसू के फूलों से बना हुआ रंग तथा प्राकृतिक रंगों से होली खेलने की परंपरा को बनाए हुए हैं, साथ ही इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं। रासायनिक रंगों के कुप्रभावों की जानकारी होने के बाद बहुत से लोग स्वयं ही प्राकृतिक रंगों की ओर लौट रहे हैं। होली की लोकप्रियता का विकसित होता हुआ अंतर्राष्ट्रीय रूप भी आकार लेने लगा है। बाज़ार में इसकी उपयोगिता का अंदाज़ इस साल होली के अवसर पर एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठान केन्ज़ोआमूर द्वारा जारी किए गए नए इत्र होली है से लगाया जा सकता है।

भगवान नृसिंह द्वारा हिरण्यकशिपु का वध

माना जाता है कि प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु नाम का एक अत्यंत बलशाली असुर था। अपने बल के दर्प में वह स्वयं को ही ईश्वर मानने लगा था। उसने अपने राज्य में ईश्वर का नाम लेने पर ही पाबंदी लगा दी थी। हिरण्यकशिपु का पुत्र प्रह्लाद ईश्वर भक्त था। प्रह्लाद की ईश्वर भक्ति से क्रुद्ध होकर हिरण्यकशिपु ने उसे अनेक कठोर दंड दिए, परंतु उसने ईश्वर की भक्ति का मार्ग न छोड़ा। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका को वरदान प्राप्त था कि वह आग में भस्म नहीं हो सकती। हिरण्यकशिपु ने आदेश दिया कि होलिका प्रह्लाद को गोद में लेकर आग में बैठे। आग में बैठने पर होलिका तो जल गई, पर प्रह्लाद बच गया। ईश्वर भक्त प्रह्लाद की याद में इस दिन होली जलाई जाती है। प्रतीक रूप से यह भी माना जता है कि प्रह्लाद का अर्थ आनन्द होता है।

वैर और उत्पीड़न की प्रतीक होलिका (जलाने की लकड़ी) जलती है और प्रेम तथा उल्लास का प्रतीक प्रह्लाद (आनंद) अक्षुण्ण रहता है। प्रह्लाद की कथा के अतिरिक्त यह पर्व राक्षसी ढुंढी, राधा कृष्ण के रास और कामदेव के पुनर्जन्म से भी जुड़ा हुआ है। कुछ लोगों का मानना है कि होली में रंग लगाकर, नाच-गाकर लोग शिव के गणों का वेश धारण करते हैं तथा शिव की बारात का दृश्य बनाते हैं। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि भगवान श्रीकृष्ण ने इस दिन पूतना नामक राक्षसी का वध किया था। इसी खुशी में गोपियों और ग्वालों ने रासलीला की और रंग खेला था।

हौसलों की 'निडर' उड़ान: जब बेड़ियों को ही बना लिया पंख

अक्सर लोग बाधाओं को अंत मान लेते हैं, लेकिन कुछ ऐसी शख्सियतें होती हैं जो शून्य से शिखर तक का सफर अपनी व्हीलचेयर पर बैठकर तय करती हैं। 'निडर फाउंडेशन' के साथ जुड़ी ये दिव्य महिला उद्यमी आज इस बात का प्रमाण हैं कि दिव्यांगता शरीर की एक अवस्था हो सकती है, मन की नहीं। आज 'द वमानिया टाइम्स' विशेष रूप से उन नायिकाओं की कहानी लेकर आया है, जिन्होंने खुद को "बोझ" समझने वाली सामाजिक मानसिकता को करारा जवाब दिया है। चाहे वह व्हीलचेयर मॉडल के रूप में चमकती राखी पांडेय हों, या जम्मू-कश्मीर की वादियों में 300 दिव्यांगों का नेतृत्व करने वाली रुकिया अकबर; इन सभी की कहानियों में एक बात समान है—हार न मानने का जज्बा। इन महिलाओं का सफर यह साबित करता है कि यदि सही मार्गदर्शन (जैसे 'निडर फाउंडेशन' का सहयोग) और अटूट विश्वास हो, तो कोई भी मंजिल दूर नहीं है। आइए, जानते हैं इन 'अजेय' महिलाओं के संघर्ष और सफलता की पूरी गाथा।

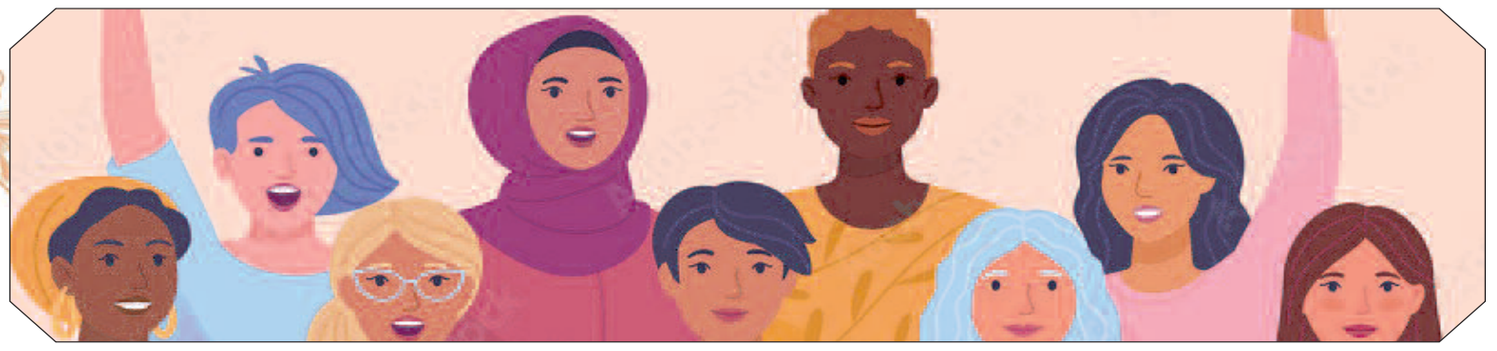

राखी पांडेय: "बोझ" से ब्रांड एंबेसडर तक का अजेय सफर

83% लोकोमोटर दिव्यांगता के बावजूद राखी पांडेय आज एक सफल उद्यमी, प्रोफेशनल व्हीलचेयर मॉडल और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर हैं। उन्होंने खुद को परिवार पर "बोझ" समझने की मानसिकता को हराकर वित्तीय स्वतंत्रता की नई मिसाल पेश की है।

संघर्ष और सफलता के मुख्य पड़ाव

■ *आत्मनिर्भरता की शुरूआत: अपनी बहनों के सहयोग से बुटीक खोलकर करियर की शुरूआत की।*

■ *नवाचार (Innovation): 2020 की चुनौतियों के बाद उन्होंने 'नीडल एंड थिम्बल्स' के साथ मिलकर 'मोबाइल बुटीक सर्विस' शुरू की। वह अपनी मॉडिफाइड स्कूटी पर व्हीलचेयर रखकर घर-घर सेवाएं देती हैं।*

■ *समावेशी पहचान: EAGLE राइडर्स टीम का हिस्सा बनकर उन्होंने मैराथन और व्हीलचेयर मॉडलिंग में धाक जमाई। आज सोशल मीडिया पर उनके 40,000 से ज्यादा फॉलोअर्स हैं।*

प्रमुख उपलब्धियां

■ *NCPEDP-हेलेन केलर अवार्ड (2023): उद्यमिता में उत्कृष्टता के लिए।*

■ *ऊर्जा की उड़ान अवार्ड: हरियाणा सरकार द्वारा सम्मानित।*

■ *शॉर्ट टॉपर अवार्ड: मीडिया और सोशल इन्फ्लुएंस के लिए।*

"व्हीलचेयर रुकने का नहीं, बल्कि आगे बढ़ने का एक अलग तरीका है। मैं खुद को बोझ नहीं, बल्कि अन्य दिव्यांगों के लिए एक सेतु मानती हूँ।" — राखी पांडेय

सर्जना देशमा: रंगों के माध्यम से अभिव्यक्ति की एक यात्रा

■ परिचय: मथुरा की एक स्व-शिक्षित (Self-taught) कलाकार, जिन्होंने 80% शारीरिक दिव्यांगता को अपनी बाधा नहीं, बल्कि अपनी शक्ति बनाया। पिछले 7 वर्षों से कला के माध्यम से अपनी पहचान स्थापित कर रही हैं।

■ **विशेषज्ञता:** ऑयल पेंटिंग और पेंसिल पोर्ट्रेट। इनके काम में आराध्य श्री कृष्ण और प्रकृति की झलक प्रमुखता से दिखती है।

■ **मेंटरशिप व सहयोग:** 'निडर ऑर्गनाइजेशन' और ब्रजेश शर्मा सर (डायरेक्टर, श्री राम सेंटर, ग्वालियर) के मार्गदर्शन में एक कलाकार से उद्यमी (Entrepreneur) बनने का सफर।

■ **सेवाएं:** कस्टमाइज्ड हैंडमेड पेंटिंग्स (शादी, जन्मदिन आदि के लिए) और ऑनलाइन/ऑफलाइन आर्ट क्लासेज।

संगीता वर्मा: कला और शब्दों की शिल्पी

ईश्वर की अनुकम्पा और अटूट जुनून ने मुझे शून्य से शिखर तक पहुँचाया

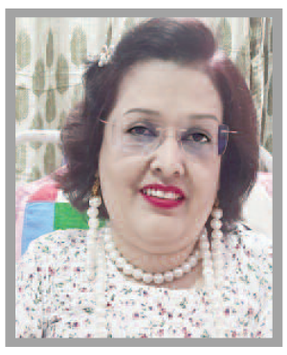

मध्य प्रदेश के रतलाम की रहने वाली संगीता जी बचपन से ही 85% दिव्यांगता और सामाजिक तानों से लड़ीं, लेकिन कभी हार नहीं मानी। साबुन के रैपर पर ड्राइंग बनाने वाली नन्ही लड़की आज एक स्थापित आर्टिस्ट, राइटर और कवयित्री हैं। 13 वर्ष की आयु से आत्मनिर्भर बनीं संगीता जी आज घर पर ही आर्ट क्लासेस चलाती हैं।

■ **विशेषता:** बिना किसी औपचारिक शिक्षा के कैनवास पेंटिंग, डिजिटल आर्ट और पॉलीमर क्ले ज्वेलरी में माहिर।

■ **उपलब्धि:** ऑनलाइन प्रतियोगिताओं में ढेरों मेडल और ट्रॉफियाँ। 'नेदर' (NEDAR) समूह के सहयोग से मिली इलेक्ट्रिक व्हीलचेयर ने उनके आत्मविश्वास को नए पंख दिए हैं।

शैली सूद 38 साल की हैं। उन्होंने MBA किया और कई कॉर्पोरेट कंपनियों में बिजनेस डिपार्टमेंट एग्जीक्यूटिव के तौर पर काम किया। शादी के बाद, वह मुंबई चली गई और एक सीनियर मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव के तौर पर काम किया, फिर उन्होंने एक प्रोफेशनल मेकअप आर्टिस्ट बनने के अपने शौक को पूरा करने के लिए नौकरी छोड़ दी। अब वह फिल्म इंडस्ट्री, कॉर्पोरेट जगत और ब्राइडल मेकअप में काम करती हैं, साथ ही अपना घर और बेटी को भी संभालती हैं।

2000 से शुरू कर नीलमबेन बनीं 'आत्मनिर्भर'

80% दिव्यांगता के बावजूद सूरत की नीलमबेन मकवाणा आज महिला सशक्तिकरण की मिसाल हैं। कभी ₹100 की दिहाड़ी पर जरी का काम करने वाली नीलमबेन ने कोविड काल की तंगी के बीच मात्र ₹2,000 से हस्तनिर्मित ज्वेलरी का काम शुरू किया।

उनकी मेहनत रंग लाई और उन्हें 'ह्यूमन एंटरप्रेन्योर अवॉर्ड' से नवाजा गया। आज वे खुद सफल उद्यमी होने के साथ-साथ 25 अन्य महिलाओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार से जोड़ चुकी हैं। वर्ष 2024 में 'निडर फाउंडेशन' से जुड़ने के बाद उनके व्यवसाय को नई पहचान और विस्तार मिला है। नीलमबेन प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को धरातल पर सच कर रही हैं।

प्रेरणा की मिसाल: नेशनल पैरा एथलीट गायत्री शर्मा

दिल्ली की 53 वर्षीय गायत्री शर्मा ने 72% दिव्यांगता के बावजूद अपनी पहचान एक सफल नेशनल पैरा एथलीट और उद्यमी के रूप में बनाई है । बचपन में पोलियो और बाद में कम उम्र में पति को खोने जैसे भारी संघर्षों के बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी । आज वह एक सिंगल पैरेंट के रूप में अपने बच्चे की परवरिश के साथ-साथ 'मेरे बच्चे एंटरप्राइजेज' का सफल संचालन कर रही हैं ।

प्रमुख उपलब्धियां:

■ **खेल:** स्टेट पैरा स्पोर्ट्स 2025 में दो गोल्ड मेडल और नेशनल लेवल पर 'जीत कुनेडो' में स्वर्ण पदक जीता

■ **सम्मान:** व्यवसाय और सामाजिक कार्यों के लिए उन्हें NCPEDP हेलेन केलर अवार्ड 2024 से नवाजा गया है

■ **साहस:** वह 'ईगल स्पेशली एबल राइडर्स' की सदस्य हैं और कई कठिन सामाजिक बाइक राइड्स पूरी कर चुकी हैं

उनका जीवन यह साबित करता है कि दिव्यांगता कभी सपनों की राह में बाधा नहीं बनती ।

गायत्री शर्मा

नारी शक्ति

नारी तू एक अदभुत शक्ति है
तेरी शक्ति से ही
यह पूरी दुनिया आबाद है
मां दुर्गा मां काली तुझ में वास करती है
जो अपने दुश्मनों का नाश करती है
हालात कैसे भी हो
आंखों में चमक लबों पर हंसी
तेरे हर वक्त रहती है
बात जब अपनी हो या अपनों की
तू पीछे नहीं हटती है
नन्ही सी जान को इस दुनिया में लाकर
हजारों दर्द सहती हैं
फिर भी तेरे चेहरे पर चेन और सुकून
दिखता है
उस नन्ही से जान को
जब तू उंगली पड़कर चलना सिखाती
है
तब तू एक नए संसार का निर्माण
करती है
तेरे समर्पण गीने नहीं जा सकते
तू माँ है तू बहन है तू बेटी है तू पत्नी है
पर तू सबसे पहले एक नारी है।

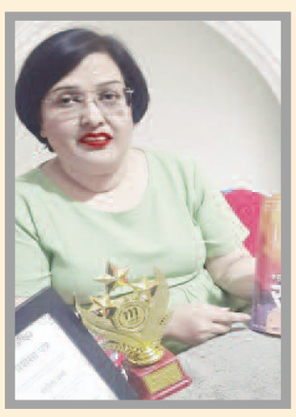

संगीता वर्मा
(चाँदनी)

रुकिया अकबर: हौसलों की नई उड़ान

"परिस्थितियाँ शरीर को रोक सकती हैं, पंखों को नहीं।" जम्मू-कश्मीर के बारामूला की रुकिया 100% दिव्यांग होने के बावजूद आज एक सफल उद्यमी और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। 'नेदर' (ठएउअफ) ग्रुप से बिजनेस की बारीकियां सीखकर उन्होंने न केवल खुद को आत्मनिर्भर बनाया, बल्कि आज अपने परिवार का भी सहारा हैं।

■ ***सामाजिक योगदान:*** *300 से अधिक दिव्यांगों के समूह का नेतृत्व, उन्हें कौशल विकास और आत्मनिर्भरता के लिए प्रेरित करना।*

■ ***संदेश:*** *अपनी मुश्किलों को ताकत बनाइए; जब आप खुद के लिए खड़े होते हैं, तभी दुनिया आपके साथ चलती है।*

RNI: UPHIN/2021/81679

द वुमनिया टाइम्स

हौसलों की उड़ान और सफलता के अनछुए रंग: 'द वुमनिया टाइम्स' की विशेष प्रस्तुति

नारी केवल सृष्टि की जननी ही नहीं, बल्कि शक्ति, धैर्य और अदम्य साहस की जीवंत मिसाल भी है। आज जब हम अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मना रहे हैं, 'द वूमानिया टाइम्स' आपके लिए लेकर आया है कुछ ऐसी महिलाओं की गौरवगाथा, जिन्होंने अपनी मेहनत से न केवल अपनी तकदीर बदली, बल्कि समाज के लिए एक नई राह भी बनाई। मणिपुर की सांस्कृतिक साधिका खुमंथेम नर्मदा देवी से लेकर हौसलों के पंखों पर सवार रुकिया अकबर तक—यह संकलन उन आवाजों का है जिन्होंने संघर्षों को संगीत में बदला और अभावों को अपनी कला का कैनवस बना लिया। आइए, रूबरू होते हैं इन 'वूमानिया सुपरस्टार्स' से, जिनकी सफलता की गूँज आज पूरी दुनिया सुन रही है।

खुमंथेम नर्मदा देवी: कला और संस्कृति की अनन्य साधिका

खुमंथेम नर्मदा देवी मणिपुर की एक प्रतिष्ठित कलाकार हैं, जिनका जन्म 1 अप्रैल, 1968 को इंफाल पश्चिम के थांगमीबंद खुयाथोंग पोलम लेकाई में हुआ था। एक इंजीनियर पिता, खुमंथेम इबोटोंबी सिंह, और प्रसिद्ध नट संकीर्तन कलाकार माता, बिधुमुखी देवी के घर जन्मी नर्मदा जी को कला की विरासत बचपन में ही प्राप्त हो गई थी। छह भाई-बहनों में तीसरी, नर्मदा जी के मन में कला के प्रति गहरा अनुराग शैशवावस्था से ही था।

प्रारंभिक शिक्षा और नृत्य यात्रा उनकी कलात्मक यात्रा नट संकीर्तन से शुरू हुई, जहाँ उन्होंने कम उम्र में ही मंदिरों और मंडपों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। आकाशवाणी इंफाल के बाल कार्यक्रमों में एक बाल कलाकार के रूप में उनकी प्रस्तुतियों ने उनकी पहचान बनाई। मात्र 11 वर्ष की आयु में, उन्होंने 'जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी' में प्रवेश लिया, जहाँ छात्रवृत्ति के साथ डिप्लोमा तक की शिक्षा पूर्ण की। 1979 में महाराजकुमारी बिनोदिनी देवी के नेतृत्व में कोलकाता में मंचित बैले "कोंग हंगोई" उनकी पहली महत्वपूर्ण बाहरी प्रस्तुति थी।

रंगमंच में योगदान शास्त्रीय मणिपुरी नृत्य के साथ-साथ, उन्होंने रंगमंच की बारीकियों को भी आत्मसात किया। उन्होंने लोकेंद्र अरामबम (आर्यन थिएटर) और रतन थियाम (कोरस रिपेटरी थिएटर) जैसे दिग्गजों के मार्गदर्शन में पाँच वर्षों तक गहन प्रशिक्षण लिया। "इराबोत", "इम्फाल इम्फाल" और "लेइमा येंगिलंगेई खुनू काबा" जैसे नाटकों में उनके जीवंत अभिनय ने उन्हें एक बहुआयामी कलाकार के रूप में स्थापित किया।

डॉ. जया श्रीवास्तव: सुरों के संघर्ष से शिखर तक

डॉ. जया श्रीवास्तव संगीत जगत का एक ऐसा देदीप्यमान नक्षत्र हैं, जिन्होंने न केवल अपनी आवाज को पहचान दी, बल्कि सैकड़ों अन्य प्रतिभाओं के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

27 सितंबर 1971 को कानपुर में जन्मी जया जी का संगीत से नाता जन्मजात था, जो उन्हें अपनी विदुषी माता से विरासत में मिला। उनकी जीवन यात्रा एक ऐसी बेटी की कहानी है जिसने प्रतिकूल परिस्थितियों को चुनौती देकर अपने सपनों के आकाश को प्राप्त किया।

शिक्षा और उपलब्धियाँ डॉ. जया ने वाराणसी और कानपुर से अपनी शिक्षा पूरी की। उनके पास संगीत प्रभाकर (गायन और तबला) के साथ-साथ 'भाव संगीत' और 'तंत्र वाद्य' में सीनियर डिप्लोमा की उपाधियाँ हैं। वर्ष 2022 में उन्हें मानद डॉक्टरेट से सम्मानित किया गया। उनकी प्रतिभा का डंका 'इंडियाज गॉट टैलेंट' (सीजन 1) के मंच पर भी बजा, जहाँ उन्होंने अपनी गायकी से जजों को मंत्रमुग्ध कर दिया। संघर्ष और समर्पण उनका सफर आसान नहीं था। विवाह के बाद पति के सहयोग से उन्होंने संगीत को पुनर्जीवित किया। अपने गुरु से सीखने के लिए वे भोर में 3 बजे की ट्रेन पकड़कर 120 किमी दूर जाती थीं। रीढ़ की हड्डी में तकलीफ और बच्चों की जिम्मेदारी के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी। समाज और संगीत में योगदान एक कुशल गायिका, लेखिका और समाज सेविका के रूप में उन्होंने:

- **400 से अधिक शिष्यों को शास्त्रीय और लोक संगीत में प्रशिक्षित किया।**
- **दूरदर्शन के शो 'माटी के बोल' में जज और मेंटर की भूमिका निभाई।**
- **दृष्टिबाधित और दिव्यांग कलाकारों (जैसे शबीना सैफी) को राष्ट्रीय मंच दिलाकर समाज सेवा की मिसाल पेश की।**

डॉ. जया श्रीवास्तव आज औरैया जैसे छोटे शहरों की प्रतिभाओं के लिए एक सेतु का कार्य कर रही हैं, जो संगीत के माध्यम से रूढ़ियों को तोड़कर एक नई सांस्कृतिक सेना तैयार कर रही हैं।

रेणु भट्ट: अनुभवी ब्रॉडकास्टर, एंकर एवं वॉइस ओवर आर्टिस्ट

- अनुभवी रेडियो जॉकी: 15 वर्षों से अधिक का लंबा अनुभव। आकाशवाणी (AIR) 102.6 FM 'रेनबो' के साथ मुख्य रूप से जुड़ी हुई हैं। वर्तमान में 'सुप्रभात' और 'गुड मॉर्निंग दिल्ली-ठउफ' जैसे लोकप्रिय कार्यक्रमों की होस्ट।

- राष्ट्रीय पहचान: गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) के अवसर पर आकाशवाणी की ओर से स्पॉट कमेंट्री करने का गौरव प्राप्त।
- मंच संचालन (Stage Anchoring): मंत्रालयों और कॉर्पोरेट जगत के प्रतिष्ठित कार्यक्रमों का सफल संचालन। उत्तराखंड फिल्म फेस्टिवल (YUCA) और सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेले (वर्ष 2025 एवं 2026) जैसे राष्ट्रीय स्तर के आयोजनों की मुख्य एंकर।
- बहुआयामी कलाकार: दूरदर्शन और NCERT के साथ टीवी एंकर व वॉइस-ओवर आर्टिस्ट के रूप में सक्रिय। थिएटर, एक्टिंग और विज्ञापनों (TVC) में भी सक्रिय भागीदारी।
- अकादमिक योगदान: दिल्ली विश्वविद्यालय और विभिन्न निजी संस्थानों में बतौर अतिथि व्याख्याता (Guest Lecturer) भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन।

कुसुम भट्ट: मेकअप जगत की बहुमुखी हस्ताक्षर

मेकअप आर्ट की दुनिया में 7 वर्षों से अधिक का गहरा अनुभव रखने वाली कुसुम भट्ट आज एक प्रतिष्ठित नाम हैं। मुंबई की प्रसिद्ध 'फैट मू एकेडमी' (Fat Mu Academy) से प्रशिक्षित कुसुम जी न केवल सामान्य मेकअप, बल्कि क्रिएटिव, स्पेशल इफेक्ट्स (SFX) और 'प्रोस्थेटिक मेकअप' में भी विशेषज्ञता रखती हैं।

प्रमुख उपलब्धियाँ: *नेटफ्लिक्स की चर्चित वेब सीरीज 'लीला' (छी') और 'गन्स एंड गुलाब्स' (Guns & Gulaabs) में दिग्गज कलाकारों के साथ बतौर मेकअप आर्टिस्ट कार्य। हाल ही में 'एक्सिस मैक्स लाइफ इंश्योरेंस' के विज्ञापन में अपनी कला का प्रदर्शन। 'उत्तराखंड सिने अवार्ड्स' जैसे बड़े आयोजनों में मेकअप आर्टिस्ट की महत्वपूर्ण भूमिका। कुसुम जी सरकारी और कॉर्पोरेट आयोजनों से लेकर एड और प्रिंट शूट्स तक में सक्रिय हैं। अपनी कला को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए वे मेकअप की शिक्षा भी देती हैं और साथ ही इवेंट मैनेजमेंट के क्षेत्र में भी कुशल नेतृत्व प्रदान करती हैं।*

संघर्ष से सफलता तक: एक महिला उद्यमी की प्रेरक कहानी

मेरा नाम प्रीति है। मेरी सफलता की यात्रा किसी आसान रास्ते से नहीं गुजरी, बल्कि यह संघर्ष, मेहनत और निरंतर विश्वास की कहानी है। मैंने दसवीं कक्षा से ही काम करना शुरू कर दिया था। पारिवारिक आर्थिक परिस्थितियों के कारण मुझे परिवार को सहयोग देने के लिए उसी उम्र में शिक्षिका की जिम्मेदारी संभालनी पड़ी। बारहवीं के बाद कॉलेज में मेरा चयन हुआ, लेकिन सुबह नौकरी करना आवश्यक था, इसलिए मैंने शाम की कक्षाओं में प्रवेश लिया। कॉलेज की पढ़ाई के साथ-साथ मैं घर पर ट्यूशन भी पढ़ाती रही और सत्यवती कॉलेज से बी.कॉम. की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद मैंने एक कंपनी में एचआर के रूप में कार्य किया और साथ ही रात में ट्यूशन जारी रखा। स्नातक के बाद मैंने एमबीए किया। मेरा सपना आईआईएम से पढ़ाई करने का था, जो उस समय पूरा नहीं हो सका। विवाह और मातृत्व के बाद मुझे नौकरी छोड़नी पड़ी, लेकिन मैंने हार नहीं मानी। घर से ही मैंने अपना रिक्रूटमेंट फर्म "रिसोर्स मैपिंग कंसल्टेंसी" शुरू किया। चुनौतियाँ कई थीं, लेकिन आत्मविश्वास और लगातार मेहनत ने मुझे आगे बढ़ने की ताकत दी। आज मैं 12 लोगों को रोजगार दे रही हूँ और दो बच्चों की माँ हूँ। हाल ही में मेरा चयन आईआईएम लखनऊ झ्र बिजनेस एंटरप्रेन्योर प्रोग्राम के लिए हुआ, जो मेरे सपनों के सच होने का प्रमाण है। मेरा लक्ष्य अपनी कंपनी को करोड़ों तक पहुँचाना और 100 से अधिक लोगों को रोजगार देना है।

स्वामी, मुद्रक और प्रकाशक प्रीति पण्डेय द्वारा के -287, 5वां अपेनुए, गौड़ सिटी-1, ग्रेटर नॉएडा वेस्ट, गौतमबुध नगर, उत्तरप्रदेश-201308 से प्रकाशित और इम्प्रेशन प्रिंटिंग एन पैकेजिंग, सी-18,19,20, सेक्टर-59, नोएडा, उत्तरप्रदेश से मुद्रित.
मुख्य संपादक : संदीप द्विवेदी, संपादक : प्रीति पाण्डेय, उप संपादक : विनोद रावत एवं सिमरन पाठक, संवाददाता (दिल्ली) - दिनेश पाठक एवं राखी पाण्डेय, ब्यूरो प्रमुख : कैसर रजा, मुंबई एवं शेषनारायण चौबे (मुन्ना), वाल्मीकिनगर
प्रमुख संवाददाता : कुंदन कुमार - मुजफ्फरपुर, राकेश पटेल - मुजफ्फरपुर Email - thewomaniyatimes@gmail.com Mobile - 9868317507